दुष्यंत कुमार की ग़ज़लें

1.
देख, दहलीज से काई नहीं जाने वाली,
ये खतरनाक सचाई नहीं जाने वाली।

कितना अच्छा है कि सांसों की हवा लगती है,
आग अब उनसे बुझाई नहीं जाने वाली।

एक तालाब–सी भर जाती है हर बारिश में,
मैं समझता हूं ये खाई नहीं जाने वाली।

चीख निकली तो होठों से, मगर मद्धम है,
बंद कमरों को सुनाई नहीं जाने वाली।

तू परेशान बहुत है, तू परेशान न हो,
इन खुदाओं की खुदाई नहीं जाने वाली।

आज सड़कों पे चले आओ तो दिल बहलेगा,
चन्द गज़लों से तन्हाई नहीं जाने वाली।

2.
कहीं पे धूप की चादर बिछा कर बैठ गए,
कहीं पे शाम सिरहाने लगा के बैठ गए।

जले जो रेत में तलुवे तो हमने ये देखा,
बहुत–से लोग वहीं छटपटा के बैठ गए।

खड़े हुए थे अलावों की आंच लेने को,
सब अपनी–अपनी हथेली जला के बैठ गए।

दुकानदार तो मेले में लुट गए यारो,
तमाशबीन दुकानें लगा के बैठ गए।

लहू–लुहान नज़रों का ज़िक्र आया तो ,
शरीफ लोग उठे दूर जा के बैठ गए।

ये सोच कर कि दरख़्तों में छांव होती है,
यहां बबूल के साये में आ के बैठ गए।

3.
आज वीरान अपना घर देखा,
तो कई बार झांक कर देखा।

पांव टूटे हुए नज़र आये,
एक ठहरा हुआ सफर देखा।

होश में आ गए कई सपने,
आज हमने वो खंडहर देखा।

रास्ता काट कर गई बिल्ली,
प्यार से रास्ता अगर देखा।

नालियों में हयात देखी है,
गालियों में बड़ा असर देखा।

उस परिन्दे को चोट आई तो,
आपने एक–एक पर देखा।

हम खड़े थे कि ये जमी होगी,
चल पड़ी तो इधर–उधर देखा।

4.
ये सच है कि पांवों ने बहुत कष्ट उठाये,
पर पांव किसी तरह से राहों पे तो आये।

हाथों में अंगारों को लिए सोच रहा था,
कोई मुझे अंगारों की तासीर बताए।

जैसे किसी बच्चे को खिलौने न मिले हों,
फिरता हूं कई यादों को सीने से लगाए।

चट्टानों से पांवों को बचा कर नहीं चलते,
सहमे हुए पांवों से लिपट जाते हैं साए।

यों पहले भी अपना–सा यहां कुछ तो नहीं था,
अब और नज़ारे हमें लगते हैं पराए।

पाठक मंच

मज़दूर मोर्चा का नया अंक मिला। हूडा में करोड़ों घोटाला पकड़ में आया, पर और किसी अख़बार में यह नज़र नहीं आया। नक्सलवाद पर आपने खूब लिखा है। हरियाणा विधानसभा चुनाव का विश्लेषण भी ठोस है। यह बात सही है कि हुड्डा दूसरी बार मुख्यमंत्री बनने में सफ़ल हो गये,पर इन्होंने जितनी घोषणायें की हैं और शिलान्यास किये हैं, कभी पूरे होने वाले नहीं। हुड्डा सिर्फ़ घोषणावीर रहे हैं। हरियाणा में राजनीति में विकल्पहीनता का दौर है और सभी दलों के चेहरे भी एक जैसे हैं। अत: जनता की यह मनोवृति बन गई है कि कोई भी मुख्यमंत्री बने, उसे इससे क्या लेना–देना? जब आम तनता में ऐसी प्रवृत्ति आ जाती है तो शासक वर्ग भी अनियंत्रित हो जाता है और उसकी मनमानी बढ़ जाती है। माओवाद का धमाका शीर्षक लेख भी अच्छा लगा। आओ, नेहरू को याद करें शीर्षक लेख में आपने नेहरू की नीतियों की बखिया उधेड़ कर रख दी है। कुल मिलाकर अंक बहुत ही अच्छा एवं प्रभावशाली है।

–जगजीत, गुड़गांव

मज़दूर मोर्चा का अंक मिला। इस अंक में नेहरू पर जो लेख लिखा गया है, वह बहुत ही सुंदर है। इसके अलावा गपशप में दी गई सामग्री से अच्छा मनोरंजन होता है। मोइली जो दावा कि दाग़ियों को जज नहीं बनाया जायेगा, पूरी तरह आधारहीन है। न्यायपालिका में जब भ्रष्टाचारी ही भरे पड़े हैं तो मोइली साहब क्या आसमान से बंदे उतारेंगे? जहां तक न्यायपालिका के मान–सम्मान का प्रश्न है, वह धूल में मिल चुका है और अब तो लोग़ न्यापालिका का नाम सुनते ही मुंह फ़ेर लेते हैं। अंक में प्रकाशित अन्य सामग्री भी अच्छी लगी। चूंकि राजनीतिक चीजें ज़्यादा होती हैं और आपके अख़बार का स्वरूप राजनीतिक है, इसलिए आप संस्कृति और समाज से जुड़ी अन्य चीजें नहीं प्रकाशित कर पाते हैं। लेकिनकभी–कभी कुछ मौलिक चीजें प्रकाशित किया करें।

– अनुजदयाल, फरीदाबाद

मज़दूर मोर्चा का नया अंक मिला। नेहरू पर प्रकाशित लेख अच्छा लगा। आज तक नेहरू पर इस तरह का आलोचनात्मक लेख पढ़ने को नहीं मिला था। नया स्तंभ 'गपशप' भी अच्छा लगता है। आपके इस अख़बार के माध्यम से मैं नगरपालिका के अधिकरियों का ध्यान डबुआ और जवाहर कॉलोनी के लोग़ों की समस्याओं की ओर दिलाना चाहता हूं।

इन कॉलोनियों में जगह–जगह गंदगी की इतनी भरमार है कि उससे लोग़ बीमार पड़ रहे हैं। डॉक्टरों के पास जाने पर वे कहते हैं कि यह बीमारियां मच्छरों के काटने से होती है, पर जब तक गंदगी को हटाया नहीं जाता है, साफ़–सफ़ाई की व्यवस्था नहीं होती, जानलेवा मच्छर पैदा होते रहेंगे ओर लोग़ों का जीना मुश्किल करते रहेंगे। यही हाल पानी का है। नगर निगम का पानी आता नहीं। जहां आता भी है, वहां के लोग़ समझ सकते हैं कि कैसा आता है? डबुआ और जवाहर कॉलोनी साधारण लोग़ों की बस्ती है। यहां के लोग़ पानी खरीद कर पीने को मज़बूर हैं। क्या नगर निगम इस समस्या की ओर ध्यान देगा?

– राजाराम, फरीदाबाद

मज़दूर मोर्चा का नया अंक मिला। हूडा में करोड़ों का घोटाला पकड़ा गया। इस खबर से आश्चर्य नहीं हुआ। आज सरकार के जितने भी विभाग हैं, सब में घोटाले अपने चरम पर हैं। सरकारी अफ़सरों के साथ–साथ मंत्रियों की भी यही नीति है कि लूट सको लूट। अगर जत कर लूटा नहीं तो मंत्री क्यों बना और अफ़सर क्यों बना?

इससे तो अच्छा था कि किसी कुटिया में बैठ कर भजन गाता। भ्रष्टाचार इतनी बड़ी समस्या है कि समझ में नहीं आता कि इस पर अंकुश कैसे लग पायेगा। जब मंत्री स्तर पर ही भ्रष्टाचार होते हैं तो अन्य स्तर पर क्यों न हों? अंक में प्रकाशित अन्य लेख एवं सामग्री अच्छी लगी। मज़दूर मोर्चा की यह धार बनी रहेगी।

–रामजतन शर्मा, बल्लबगढ़

राहगीरों की मुसीबत बना मंत्री बने महेन्द्र प्रताप का स्वागत

फ़रीदाबाद (म.मो.) ज़िले की बड़खल विधानसभा सीट से विधायक बने महेन्द्र प्रताप मंत्री बन कर पहली बार जब 11 नवम्बर को शहर में लौटे तो बदरपुर बार्डर से ले कर अजरौंदा मोड़ तक करीब तीन घंटे यातायात लगभग ठप रहा। शहर के बीचोबीलच से गुजरने वाले इस राजमार्ग पर तो सामान्यतया वैसे ही जाम की स्थिति बनी रहती है, उसके ऊपर जब मंत्री के स्वागत के नाम पर जब सड़क पर लगातार घंटों तक नाटकबाज़ी होती रहे तो राहगीरों की मुसीबत का अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है। करीब डेढ़ वर्ष पूर्व भी इसी सड़क पर ऐसा ही नज़ारा देखने को मिला था जब इसी हल्के के विधायक एकाग्रचंद मंत्री बन कर शहर में लौटे थे।

> "कितना अच्छा और सुंदर लगता यदि मंत्री जी बदरपुर बार्डर की बजाय दशहरा मैदान अथवा ऐसे ही किसी अन्य स्थान पर आकर अपने मतदाताओं का अभिवादन एवं फूलमालायें स्वीकार करते।"

जनता द्वारा किये गये स्वागत को जनप्रतिनिधि द्वारा सवेकार करना अच्छी बात है, परन्तु जनप्रतिनिधि को कम से कम यह तो सोचना ही चाहिए कि उनके स्वागत के नाम पर वास्तव में हो क्या रहा है? स्वागत के नाम पर ढोंग करने वालों में आधे से अधिक लोग़ तो वही थे जो डेढ़ साल पहले एकाग्रचंद का ढोल पीट रहे थे और उनकी वफ़ादारी की कसमें खा रहे थे। अब पासा पलटते ही बड़ी फ़ुर्ती से पाला बदल गये। और अगला पासा पलटने ही ये लोग़ तुरंत तुरंत से पाला बदल जायेंगे। ये वे लोग़ ोते हैं जोसदैव सत्ता के गलियारों में घूमते रहते हैं और सत्ता की दलाली इनका पेशा होती है। कितना अच्छा और सुंदर लगता यदि मंत्री जी बदरपुर बार्डर की बजाय दशहरा मैदान अथवा ऐसे ही किसी अन्य स्थान पर आकर अपने मतदाताओं का अभिवादन एवं फूलमालायें स्वीकार करते। इससे जहां राहगीरों को सड़क जाम से राहत मिलती वहीं जनता व उसके प्रतिनिधि के बीच एक बेहतर संवाद होता। यही सब बातें शहर के अन्य दो मंत्रियों पर भी लागू होती हैं, बेशक उनके स्वागत जुलूस अपेक्षाकृत छोटे थे और राहगीरों को कम परेशान करने वाले रहे।

पृष्ठ 1 का शेष

....ठोस काम की जरूरत

जितना उसको वेतन मिलता है, उससे अधिक का तो वह घर से निगम आने तक का पेट्रोल अपनी कार में फूंक देता है। जानकार बताते हैं कि यहां बने रहने के लिये उसने मोटा खर्च किया है। करे भी क्यों नहीं, निगम द्वारा ठेकेदारों को अदा किया जाने वाला हर एक रुपये में से पांच से दस पैसे जो उसे बैठे–बिठाये मिल जाते हैं। ऐसा भी नहीं है कि उसके हट जाने के बाद यह लूट बंद हो जायेगी, बल्कि कई अन्य लोग इस सीट पर आने का बेसब्री से इंतज़ार कर रहे हैं। समझा जा रहा है कि नवनियुक्त मंत्री महोदय विकास कार्यों को चलाने के नाम पर करों में बढ़ोत्तरी की बात सोच रहे हैं। लेकिन उनकी यह सोच एकदम ग़लत और भ्रष्टाचार को प्रोत्साहित करने वाली है। उन्हें करों में बढ़ोत्तरी के बजाये करों की होन वाली चोरी तथा खर्चों के नाम पर होने वाली लूट को काबू में करना चाहिए। उन्हें इस ओर विशेष ध्यान देना चाहिये कि निगम के कुल बजट का 60 से 70 प्रतिशत खुद निगम पर ही कैसे खर्च हो रहा है?

सूचना

मज़दूर मोर्चा पाक्षिक समाचार पत्र

फरीदाबाद के पाठकों के लिए मजदूर मोर्चा अब हॉकरों के माध्यम से उपलब्ध है। जो भी हॉकर आपके यहां अखबार देने आता है, वह मांगने पर मज़दूर मोर्चा अवश्य देगा। डाक से अखबार पहुंचे या नहीं, इसका कोई ठिकाना न होने के कारण हमने यह नई व्यवस्था की है। अखबार मिलने में किसी तरह की समस्या होने पर हमारे प्रसार प्रबंधक से निम्न मोबाइल नंबर पर संपर्क करें :

दीक्षित न्यूज एजेंसी 9811159238

अब बल्लभगढ़ व पलवल के पाठक भी अपने हॉकर से मजदूर मोर्चा प्राप्त कर सकते हैं। किसी कठिनाई की स्थिति में संपर्क करें :

ललित कौशिक
शॉप नं.6, अंबेडकर चौक, बल्लबगढ़
मोब. 9278108329

भूटानी न्यूज़ एजेंसी
मीनार गेट, पलवल। मोब.: 09354112741, 09728382049